Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी पीयूष प्रवाह

3. रेखाचित्र - गौरा

महादेवी वर्मा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'गाय करुणा की कविता है' उक्त कथन है

(अ) स्वामी विवेकानन्द का
(ब) महात्मा गाँधी का
(स) महादेवी वर्मा का
(द) बर्नाड शॉ का।

उत्तर: (ब)

प्रश्न 2. गौरा की मृत्यु हुई

(अ) लम्बी बीमारी से
(ब) जहरीली घास खाने से
(स) सुई खिलाने से
(द) उम्र पूरी होने से।

उत्तर: (स)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गौरा के पुत्र का क्या नाम रखा गया?

उत्तर: गौरा का वत्स लाल रंग का था जो गेरू के पुतले जैसा जान पड़ता था। इसलिए उसका नाम लालमणि रखा गया लेकिन सब उसे लालू कहते थे।

प्रश्न 2. स्वस्थ पशु के रोमों की क्या विशेषता होती है?

उत्तर: स्वस्थ पशु के रोमों की सफेदी में एक विशेष चमक होती है। गौरा की उज्ज्वलता को देखकर लगता था मानो किसी ने अभ्रक का चूर्ण मल दिया हो।

प्रश्न 3. लेखिको ने किस समस्या के समाधान के लिए ग्वाले को नियुक्त किया?

उत्तर: लेखिका ने गौरा के दुग्ध-दोहन की समस्या के समाधान के लिए ग्वालियर को नियुक्त किया

प्रश्न 4. जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है' लेखिका की वह वेदनामयी स्मृति क्या थी?

उत्तर: गौरा को गुड़ के साथ सुई खिला दी गई थी जो रक्त संचार के साथ उसके हृदय तक पहुँच गई। इसके बाद गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरम्भ हुआ। ग्वाले का गौरा को सुई खिलाना और गौरा का मृत्यु से संघर्ष करना। इसकी स्मृति करके लेखिका का मन आज भी सिहर उठता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गाय का महादेवी के घर पर किस तरह स्वागत किया गया? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: महादेवी जी के घर गौरा का भव्य स्वागत किया गया। 'गौरा' गाय जब महादेवी जी के घर आई तो परिचितों और परिचारकों में उसके प्रति श्रद्धा उमड़ पड़ी। उसे लाल, सफेद गुलाबों की माला पहनाई गई। केसर और रोली का बड़ा टीका लगाया गया। घी के चौमुखी दीपक से आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया। उसका गौरांगिनी नामकरण भी

किया गया। बड़ा नाम होने के कारण उसे गौरा नाम से पुकारा जाने लगा।

प्रश्न 2. 'गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शन थी।' -कथन के आधार पर गौरा के बाह्य सौन्दर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: गौरा के पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लम्बी सुडौल गर्दन , निकलते हुए छोटे-छोटे सग। भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो अधखुली पंखुड़ियों जैसे कान। लम्बी और अन्तिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ। सारा शरीर साँचे में ढ़ला-सा लगता था। गाय को मानो इटालियन मार्बल से तराश कर उस पर ओप दी गई हो। उसके गौर वर्ण में विशेष चमक थी। मानो रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो। उसकी काली बिल्लौरी आँखों को तरल सौन्दर्य तो दृष्टि को बाँध लेता था। साँचे में ढले हुए मुख पर आँखें बर्फ के नीचे जल के कुण्डों के समान लगती थीं। आँखों में एक आत्मीय विश्वास भरा था। ऐसा सुन्दर उसका पुष्ट सौन्दर्य था। वास्तव में वह प्रियदर्शन थी।

प्रश्न 3. 'अब हमारे घर में दुग्ध-महोत्सव प्रारम्भ हुआ।' कथन में वर्णित दुग्ध-महोत्सव के अवसर का चित्रण कीजिए।

उत्तर: गौरा दिनभर में लगभग बारह सेर दूध देती। लालमणि के लिए कई सेर दूध छोड़ने के बाद शेष बच्चे दूध को आस-पास के बाल गोपालों से लेकर कुत्ते-बिल्ली तक सब पर मानो 'दूधो नहाओ ' का आशीर्वाद फलित होने लगा। दुग्ध दोहन के समय कुत्ते-बिल्ली सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते । महादेव उनके आगे बर्तन रखे देता। वे सभी शिष्टता का परिचय देते । नाप-नाप कर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता। जिसे पीकर वे आनन्द मनाते। इस प्रकार दुग्ध महोत्सव मनाया जाता।

प्रश्न 4. गौरा को मृत्यु से बचाने के लिए लेखिका ने क्या-क्या प्रयत्न किये? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर: गौरा को मृत्यु से बचाने के लिए लेखिका ने अनेकानेक प्रयत्न किए। जब गौरा ने दाना-चारा खाना बन्द कर दिया तो वह दुर्बल और शिथिल होने लगी। महादेवी को इसकी चिन्ता हुई। उन्होंने पशु-चिकित्सकों को बुलाकर दिखाया। डाक्टरों ने निरीक्षण और एक्सरे से रोग का निदान खोजा और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि गौरा को गुड़ में सुई खिलाई गई है। उसे सेब का रस पिलाया गया , इंजेक्शन लगवाए गये दवा पिलाई। लखनऊ , कानपुर आदि नगरों से भी पशु चिकित्सकों को बुलाया गया। इस प्रकार गौरा को मृत्यु के मुख में से निकालने के बहुत प्रयत्न किये गए। पर वह बच न सकी।

प्रश्न 5. 'गाय करुणा की कविता है।' –उक्त कथन के आलोक में 'गौरा' रेखाचित्र की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'गौरा रेखाचित्र में गाय के अंतरंग व बाह्य सौंदर्य के साथ मानवीय संवेदना का रेखांकन है। गाय करुणा की साकार मूर्ति है और कविता भावों की संवाहिका। गाय के हृदय में करुणा के भावों का झरना झरता रहता है। गौरा संवेदनशील गाय थी। वह परोपकारी थी। अपने दुग्ध का दोहन कराकर वह दूसरों को पिलाती। पशु-पक्षी उसके साथ खेलते। कुत्ते-बिल्ली उसके पेट के नीचे और पैरों के बीच में खेलते। पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठकर उसके कान और आँख खुजाते वह शान्त खड़ी रहती। उनका स्नेह उसे अच्छा लगता। बीमार होने पर उसने इंजेक्शन की पीड़ा को सहा। कभी-कभी उसकी आँखों में आँसू की दो बूंदें आ जातीं , उस पीड़ा को भी सहती। मृत्यु के निकट आने पर वह अधिक

संवेदनशील हो गई। अंतिम समय में महादेवी के कंधे पर अपना सिर रखकर प्राण त्याग दिये। जब वह स्वस्थ थी तब महादेवी की गाड़ी की आवाज सुनकर उधर ही देखती और बाँ-बाँ की ध्वनि से पुकारती । भूख लगने पर रंभा-रंभाकर घर सिर पर उठा लेती। महादेवी की संवेदना भी उसके प्रति कम नहीं थी। जब वह मर गई तो उनका हृदय भावुक हो गया। अंतिम वाक्य - 'आह मेरा गोपालक देश! ' संपूर्ण रेखाचित्र का वह मार्मिक कथन है, जिसमें लेखिका की ममता उमड़ पड़ती है तो मानवीय संवेदना भी तड़प उठती है। रेखाचित्र की मूल संवेदना मानवीय संवेदना है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गौरा रेखाचित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: 'गौरा रेखाचित्र में गाय के अंतरंग व बाह्य सौंदर्य के साथ मानवीय संवेदना का रेखांकन है। इसमें गाय का घर में आगमन , स्वागत, लेखिका के ममत्व, रोचक वातावरण एवं गाय के प्रेम को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। गौरा गाय के स्वभाव एवं क्रियाकलापों के अंकन में लेखिका ने चित्रात्मक भाषा, बिम्ब प्रधान शैली और प्रतीकात्मक शिल्प का प्रयोग किया है। इसकी कतिपय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

भाषा शैली – रेखाचित्र की भाषा शैली सरल एवं साहित्यिक है। तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है ; यथा - वय: संधि , प्रतिफलित, साहचर्य, पयस्विनी आदि। कहीं-कहीं मुहावरों की छींटें भी देखने को मिलती हैं। भावात्मकता के कारण कहीं-कहीं भाषा गंभीर हो गई है।
अलंकारिक भाषा होने के कारण उसमें उत्कृष्ट कोटि का सौन्दर्य देखने को मिलता है। भाषा में प्रतीकात्मक शैली को भी प्रयोग हुआ है। भाषा में प्रतीकात्मकता का भी प्रयोग हुआ है।

मानवीय संवेदना – मानवीय संवेदना महादेवी जी के रेखाचित्रों की एक अनुपम विशेषता है। आलोच्य रेखाचित्र में मानवीय संवेदना का अच्छा चित्रण है। जब गौरा अस्वस्थ हो गई और उसने खाना कम कर दिया तो महादेवी की उसके प्रति संवेदना अधिक बढ़ गई। वे उसे रात में भी कई बार देखने जातीं । जब उसके प्राण निकलने लगे तो उनका हृदय रो पड़ा। गौरा ने उनके कन्धे पर अपना सिर रखकर अपने प्राण त्याग दिये। तब उनके हृदय से निकला यह कैसा गोपालक देश है , जहाँ गायों की ऐसी निर्मम हत्या की जाती है। मानवीय संवेदना इसका मूल भाव है।

आलंकारिक शैली – गौरा के सौंदर्य चित्रण के लिए लेखिका ने अलंकारिक शैली को अपनाया है। उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग अधिक है। गौरा के कान छोटे थे उनके लिए अधखुली पंखुड़ियों की उपमा दी गई है। उसके शरीर के ओज की इटैलियन मार्बल से समता की गई है। उसकी आँखों पर दिये की लौ जब पड़ती तो लगती मानो कई दीपक झिलमिला रहे हों अथवा काली लहर पर कई दिये प्रवाहित कर दिये गए हों। माथे पर आँखों का उत्कृष्ट आलंकारिक वर्णन है। वे ऐसी लगती हैं मानो बर्फ के नीचे जल के कुण्ड हों। तीव्र एवं मन्थर गति के लिए बाण की तीव्र गति और मन्द समीर की गति से समता की गई है।

चित्रात्मकता– भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान है। गौरा के शरीर एवं आँखों का वर्णन हुआ है उसे पढ़कर एक सुन्दर गाय को चित्र आँखों के सामने उभर कर आ जाता है। गौरा के पैरों , पीठ,

THE HINDI PAGE कुछ नया www.thehindipage.com

कंधों, सींग, पूँछ का जो वर्णन है उसे पढ़कर गौरा को चित्र आँखों के सामने उभर कर आ जाता है।

यथार्थ चित्रण – रेखाचित्र में मानव मन का यथार्थ चित्रण हुआ है। स्वार्थी व्यक्ति व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए कैसे जघन्य पाप कर देते हैं। इसका यथार्थ वर्णन पढ़ने को मिलता है। ग्वाले ने व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण गौरा को सुई खिलाई। यह स्वार्थी और ईर्ष्यालु व्यक्ति का यथार्थ चित्रण है। अपनों से लगाव होने से जो सुख मिलता है और बिछोह पर जो पीड़ा होती है उसका भी यथार्थ वर्णन है। गौरा के महादेवी के घर आने पर सभी को कैसी प्रसन्नता हुई और उसकी मृत्यु पर महादेवी को जो पीड़ा हुई इसका यथार्थ वर्णन है। पशुओं में भी अपनत्व होता है इसका भी यथार्थ वर्णन पढ़ने को मिलता है।

प्रश्न 2. 'आह, मेरा गोपालक देश!' -पंक्ति में निहित वेदना का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: भारत गायों का देश है। जहाँ गाय को माता समझा जाता है। वहाँ गायों की दुर्दशा है। एक ग्वाला जो गायों को पालता है उसका दूध बेचता है , वही एक गाय का काल बनेगा। इस सत्य की महादेवी ने कल्पना भी नहीं की थी। स्नेहमयी गौरा की बीमारी और उसे सुई खिलाने की बात ने महादेवी का हृदय विदीर्ण कर दिया। जिस ग्वाले पर विश्वास किया था वह ऐसा धोखा देगा , इसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। जब गौरा ने उनके कन्धे पर सिर रखकर अन्तिम साँस ली और फिर धरती पर लुढ़क गई , वह दृश्य महादेवी से देखा नहीं गया। गौरा को ले जाते समय उनका हृदय करुणा से भरे गया।

उनके मुख से निकला कि यह देश गोपालक है या गोभक्षक! वेदना से उनका हृदय तड़प उठी। उन्होंने सोचा इस देश को गोपालक देश कहना व्यर्थ है। बहुत संक्षिप्त शब्दों में महादेवीजी ने अपनी वेदना व्यक्त कर दी है।

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी पीयूष प्रवाह
3. रेखाचित्र - गौरा
महादेवी वर्मा

लेखक-परिचय

महादेवी वर्मा (1907 ई.-1987 ई.) हिन्दी के छायावादी काव्य-आन्दोलन के चार प्रमुख स्तंभों में से है। इनकी कविता में वेदना और करुणा की प्रधानता है। इन्हें आधुनिक युग की मीरौं भी कहा जाता है। महादेवी वर्मा की चिंतन-वृत्ति साहित्य और समाज दोनों दिशाओं में प्रवाहित हुई है उनका व्यक्तित्व सरलता, उदारता, संवेदनशीलता, आत्मीयता

एवं सात्त्विकता से ओतप्रोत है। उन्होंने हिन्दी संस्मरण और रेखाचित्र विधा को अप्रतिम ऊँचाई दी। महादेवी वर्मा का गद्य भाव एवं भाषा की दृष्टि से अनुपम है। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

कविता-संग्रह - 'नीहार', 'रश्मि', नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, 'यामा' आदि।

संस्मरण एवं रेखाचित्र - अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी।

निबंध-संग्रह - मेरा परिवार शृंखला की कड़ियाँ, साहित्यकार की आस्था एवं अन्य निबंध।

पाठ-परिचय

'गौरा रेखाचित्र में गाय के अंतरंग व बाह्य सौंदर्य के साथ मानवीय संवेदना का रेखांकन है। इसमें गाय का घर में आगमन, स्वागत, लेखिका के ममत्व, रोचक वातावरण एवं गाय के प्रेम को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। गौरा गाय के स्वभाव एवं क्रियाकलापों के अंकन में लेखिका ने चित्रात्मक भाषा , बिम्ब प्रधान शैली और प्रतीकात्मक शिल्प का प्रयोग किया है। अंतिम वाक्य - 'आह, मेरा गोपालक देश!' संपूर्ण रेखाचित्र का वह मार्मिक कथन है , जिसमें लेखिका की ममता उमड़ पड़ती है तो मानवीय संवेदना भी तड़प उठती है।

मूल पाठ

गौरा मेरी बहिन के घर पली हुई गाय की वयःसन्धि तक पहुँची हुई बछिया थी। उसे इतने स्नेह और दुलार से पाला गया था कि वह अन्य गोवत्साओं से कुछ विशिष्ट हो गई थी। बहिन ने एक दिन कहा, तुम इतने पशु-पक्षी पाला करती हो- एक गाय क्यों

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

नहीं पाल लेती , जिसका कुछ उपयोग हो। वास्तव में मेरी छोटी बहिन श्यामा अपनी लौकिक बुद्धि में मुझसे बहुत बड़ी हैं और बचपन उनकी कर्मनिष्ठा तथा व्यवहार कुशलता की बहुत प्रशंसा होती रही है, विशेषतः मेरी तुलना में। यदि वे आत्मविश्वास के साथ कुछ कहती हैं तो उनका विचार संक्रामक रोग के समान सुनने वाले को तत्काल प्रभावित करता है। आश्चर्य नहीं, यदि उस दिन उनके उपयोगितावाद सम्बन्धी भाषण ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि तत्काल उस सुझाव का कार्यान्वयन आवश्यक हो गया। वैसे खाद्य की किसी भी समस्या के समाधान के लिए पशु-पक्षी पालना मुझे कभी नहीं रुचा। बकरी, कुक्कुट, मछली आदि पालने के मूल उद्देश्य का ध्यान आते ही मेरा मन विद्रोह करने लगता है।

पर उस दिन मैंने ध्यानपूर्वक गौरा को देखा। पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लम्बी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो अधखुली पंखुड़ियों जैसे कान, लम्बी और अन्तिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ, सब कुछ साँचे में ढला हुआ-सा था। गाय को मानो इटेलियन मार्बल से तराश कर उस पर ओप दी गई हो।

स्वस्थ पशु के रोमों की सफेदी में एक विशेष चमक होती है। गौरा की उज्ज्वलता देखकर ऐसा लगा मानो उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो , जिसके कारण जिधर आलोक पड़ता था, उधर विशेष चमक उत्पन्न हो जाती थी।

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

गौरा को देखते ही मेरी पालने के सम्बन्ध में दुविधा निश्चय में बदल गई। गाय जब मेरे बंगले पर पहुँची , तब मेरे परिचितों और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार- सा उमड़ आया। उसे लाल सफेद गुलाबों की माला पहनाई गई , केशर-रोली का बड़ा-सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखा दिया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ गौरांगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा-अर्चना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा , परन्तु वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी। उसकी बड़ी चमकीली और काली आँखों में जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी. तब कई दियों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा. जैसे रात में काली दिखने वाली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिये हों।

गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शन थी , विशेषतः उसकी काली बिल्लौरी आँखों का तरल सौन्दर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था चौड़े , उज्ज्वल माथे और लम्बे तथा साँचे में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में नीचे जल के कुण्डों के समान लगती थीं उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता है उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं , निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है. परन्तु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक।

THE HINDI PAGE
www.thehindipage.com

महात्मा गाँधी ने गाय करुणा की कविता है. क्यों कहा , यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है। गौरा की अलस मन्धर गति से तुलना करने योग्य कम वस्तुएँ हैं। तीव्र गति में सौन्दर्य है; परन्तु वह मन्थर गति के सौन्दर्य को नहीं पाता। बाण की तीव्र गति क्षण भर के लिए दृष्टि में चकाचौंध उत्पन्न कर सकती है, परन्तु मन्द समीर से फूल का अपने वृन्त पर हौले-हौले हिलना दृष्टि का उत्सव है।

कुछ ही दिनों में यह सबसे इतनी हिलमिल गई कि अन्य पशु-पक्षी उसकी लघुता और उसकी विशालता का अन्तर भूल गए। कुते-बिल्ली उसके पेट के नीचे और पैरों के बीच में खेलने लगे। पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठकर उसके कान तथा आँखें खुजलाने लगे। वह भी स्थिर खड़ी रहकर और आँखें मूँदकर मानो उनके सम्पर्क-सुख की अनुभूति में खो जाती थी।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

हम सबको वह आवाज से ही नहीं , पैर की आहट से भी पहचानने लगी। समय का इतना अधिक बोध उसे हो गया था कि मोटर के फाटक में प्रवेश करते ही वह बाँ-बौं की ध्वनि से हमें पुकारने लगती। चाय , नाश्ता तथा भोजन के समय से भी वह इतनी परिचित थी कि थोड़ी देर कुछ पाने की प्रतीक्षा करने के उपरान्त रंभा-रभाकर घर सिर पर उठा लेती थी।

उसका हमसे साहचर्यजनित लगाव मानवीय स्नेह के समान ही निकटता चाहता था। निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती , हाथ फेरने पर अपना मुख आश्वस्त भाव से कन्धे पर रखकर आँखें मूँद लेती। जब उससे दूर जाने लगते , तब गर्दन घुमा-घुमा कर देखती रहती। आवश्यकता के लिए तो उसके पास एक ही ध्वनि थी, परन्तु उल्लास, दुःख, उदासीनता, आकुलता आदि की अनेक छाया-छवियाँ उसकी बड़ी और काली आँखों में तैरा करती थीं।

एक वर्ष के उपरान्त गौरा एक पुष्ट सुन्दर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरू का पुतले जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे , मानो गैरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया लालमणि, परन्तु उसे सब लालू के सम्बोधन से पुकारने लगे माता-पुत्र दोनों निकट रहने पर हिमराशि और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे। अब हमारे घर में मानो दुग्ध महोत्सव आरम्भ हुआ। गौरा प्रातः सायं बारह सेर के लगभग दूध देती थी , अतः लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस-पास के बाल-गोपाल से लेकर कुत्ते-बिल्ली तक सब पर मानो दूधो नहाओ का आशीर्वाद फलित होने लगा कुत्ते-बिल्लियों ने तो एक अदभुत दृश्य उपस्थित कर दिया था। दुग्धदोहन के समय वे सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते और महादेव उनके आगे उनके खाने के लिए निश्चित बर्तन रख देता। किसी विशेष आयोजन पर

आमन्त्रित अतिथियों के समान वे परम शिष्टता का परिचय देते हुए प्रतीक्षा करते रहते। फिर नाप-नाप कर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता; जिसे पीने के उपरान्त वे एक बार फिर अपने-अपने स्वर में कृतज्ञता ज्ञापन-सा करते हुए गौरा के चारों ओर उछलने-कूदने लगते । जब तक वे सब चले न जाते , गौरा प्रसन्न दृष्टि से उन्हें देखती रहती।

जिस दिन उनके आने में विलम्ब होता , वह रम्भा-रम्भाकर मानो उन्हें पुकारने लगती। पर अब दुग्धदोहन की समस्या कोई समाधान चाहती थी नौकरों में नागरिक तो दुहना जानते ही नहीं थे और जो गाँव से आये थे, वे अनभ्यास के कारण यह कार्य इतना भूल चुके थे कि घण्टों लगा देते थे। गौरा के दूध देने के पूर्व जो ग्वाला हमारे यहाँ दूध देता था, जब उसने इस कार्य के लिए अपनी नियुक्ति के विषय में आग्रह किया , तब हमने अपनी समस्या का समाधान पा लिया।

दो-तीन मास के उपरान्त गौरा ने दाना-चारा खाना बहुत कम कर दिया और वह उत्तरोत्तर दुर्बल और शिथिल रहने लगी । चिन्तित होकर मैंने पशु-चिकित्सकों को बुलाकर दिखाया। वे कई दिनों तक अनेक प्रकार के निरीक्षण , एक्सरे आदि द्वारा रोग का निदान खोजते रहे। अन्त में उन्होंने निर्णय दिया कि गाय को सुई खिला दी गई है, जो उसके रक्त-संचार के साथ हृदय तक पहुँच गई है अब सुई गाय के हृदय के पार हो जायेगी, तब रक्त-संचार रुकने से उसकी मृत्यु निश्चित है।

THE HINDI PAGE जानो कुछ नया www.thehindipage.com

मुझे कष्ट और आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई। सुई खिलाने का क्या तात्पर्य हो सकता है?दाना चारा तो हम स्वयं देखभाल कर देते हैं। परन्तु सम्भव है, उसी में सुई चली गई होगी, पर डाक्टर के उत्तर से ज्ञात हुआ कि दाने-चारे के साथ गई सुई गाय के मुख में ही छिदकर रह जाती है । गुड़ की बड़ी डली के भीतर रखी सुई ही गले के नीचे उतर जाती है और अन्ततः रक्त-संचार में मिलकर हृदय में पहुँच सकती है।

अन्त में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ जिसकी कल्पना भी मेरे लिए सम्भव नहीं थी। प्रायः कुछ ग्वाले ऐसे घरों में, जहाँ उनसे अधिक दूध लिया जाता है, गाय का आना सह नहीं पाते। अवसर मिलते ही वे गुड़ में लपेटकर सुई उसे खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर देते हैं। गाय के मर जाने पर उन घरों में वे पुनः दूध देने लगते हैं। सुई की बात ज्ञात होते ही ग्वाला एक प्रकार से अन्तर्धान हो गया , अतः सन्देह का विश्वास में बदल जाना स्वाभाविक था। वैसे उसकी उपस्थिति में भी किसी कानूनी कार्यवाही के लिए आवश्यक प्रमाण जुटाना असम्भव था।

तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरम्भ हुआ. जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है। डॉक्टरों ने कहा , गाय को सेव का रस पिलाया जावे. तो सुई पर कैल्शियम जम जाने और उसके न चुभने की सम्भावना है। अतः नित्य कई-कई सेर सेवों का रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता। शक्ति के लिए इजेक्शन पर इजेक्शन दिये जाते। पशुओं के लिए इन्जेक्शन के लिए सूजे के समान बहुत लम्बी

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

मोटी सिरिंज तथा बड़ी बोतल भर दवा की आवश्यकता होती है। अतः वह इञ्जेक्शन भी अपने आप में शल्यक्रिया जैसा यातनामय हो जाता था। पर गौरा अत्यन्त शान्ति से बाहर और भीतर, दोनों ओर की चुभन और पीड़ा सहती थी। केवल कभी-कभी उसकी सुन्दर पर उदास आँखों के कोनों में पानी की दो बूँदें झलकने लगती थी।

अब वह उठ नहीं पाती, परन्तु मेरे पास पहुंचते ही उसकी आँखों में प्रसन्नता की छाया-सी तैरने लगती थी। पास जाकर बैठने पर वह मेरे कन्धे पर अपना मुख रख देती थी और अपनी खुरदरी जीभ से मेरी गर्दन चाटने लगती थी।

लालमणि बेचारे को तो माँ की व्याधि और आसन्न मृत्यु का बोध नहीं था। उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता था, जो उसे रुचता नहीं था वह तो अपनी माँ का दूध पीना और उससे खेलना चाहता था , अतः अवसर मिलते ही वह गौरा के पास पहुँचकर या अपना सिर मार-मार कर उसे उठाना चाहता था या खेलने के लिए उसके चारों ओर उछल-कूदकर परिक्रमा ही देता रहता। मैंने बहुत से जीव-जन्तु पाल रखे हैं , अतः उनमें से कुछ समय-असमय विदा देनी ही पड़ती है ; परन्तु ऐसी मर्मव्यथा का मुझे स्मरण नहीं है।

इतनी हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर, दूध-सी उज्ज्वल पयस्विनी गाय अपने इतने सुन्दर चंचल वत्स को छोड़कर किसी भी क्षण, निर्जीव और निश्चेष्ट हो जाएगी यह सोचकर भी आँसू आ जाते थे।

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

लखनऊ, कानपुर आदि नगरों से भी पशु विशेषज्ञों को बुलाया , स्थानीय पशु-चिकित्सक तो दिन में दो-तीन बार आते रहे; परन्तु किसी ने ऐसा उपचार नहीं बताया जिससे आशा की कोई किरण मिलती। निरुपाय मृत्यु की प्रतीक्षा का मर्म वही जानता है जिसे किसी असाध्य और मरणासन्न रोगी के पास बैठना पड़ा हो। जब गौरा की सुन्दर चमकीली आँखे, निष्प्रभ हो चलीं और सेव का रस भी कण्ठ में रुकने लगा , तब मैंने अन्त का अनुमान लगा लिया। अब मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं उसके अन्त समय उपस्थित रह सकूँ। दिन में ही नहीं रात में भी कई -कई बार मैं उसे देखने जाती रही।

अन्त में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे जब मैं गौरा को देखने गई. तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कन्धे पर रखा , वैसे ही वह एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया और मेरी बाँह पर से सरककर धरती पर आ गया। कदाचित सुई ने हृदय को बेधकर बन्द कर दिया।

गौरांगिनी को ले जाते समय मानो करुणा का समुद्र उमड़ आया , परन्तु लालमणि इसे भी खेल समझ उछलता-कूदता रहा। यदि दीर्घ निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सके , तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी 'आह, मेरा गोपालक देश!'

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar
Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria
Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg